मेरा घर

बीस वर्ष मैंने
माँ-पापा की छाँव में बिताए,
उनके संस्कारों ने मुझे गढ़ा,
जीवन के अर्थ सिखाए।
फिर एक दिन विदा हुई,
आँखों में सपने और मन में
विश्वास लिए,
ईश्वर ने परितोष का साथ दिया,
और जीवन ने नए रंग लिए।
छत्तीस वर्षों का यह सफर,
सिर्फ समय नहीं, पूरा जीवन है।
सुख-दुख, हँसी-आँसू,
हर पल का साझा बंधन है।
फिर कैसे कह दूँ
कि पति का घर पराया है?
जहाँ मेरी हर सुबह मुस्कुराती है,
वही तो मेरा सच्चा साया है।
मायका मेरे बचपन की मधुर
स्मृति है,
वहाँ का प्रेम मेरे हृदय में बसा है।
पर जिस घर में मेरा आज और
कल है,
वहीं मेरा अपना संसार रचा है।
परितोष का स्नेह, उनका सम्मान,
उनकी हर पल की चिंता और
देखभाल,
ऐसा अपनापन मिला कि सच
कहूँ,
कभी नहीं महसूस हुई मायके की
कोई कमी या मलाल।
उनके संरक्षण में मैंने
अपने जीवन को खिलते देखा
है,
पत्नी होने का सम्मान,
हर दिन प्रेम में मिलते देखा है।
मायका मेरी जड़ है,
ससुराल मेरा वर्तमान और
भविष्य।
दोनों का अपना सम्मान है,
पर जीवन का सबसे सुंदर सत्य
यही है–
जिसने जीवनभर मेरा हाथ थामा,
हर कठिन राह में साथ निभाया,
उसके प्रेम ने इतना अपनापन
दिया
कि मायके की याद भी कभी
तड़प बनकर नहीं आई।
आज गर्व से कहती हूँ–
माँ-पापा मेरे जन्मदाता हैं,
पर परितोष मेरे जीवनसाथी ही
नहीं,
मेरे विश्वास, मेरी शक्ति और
मेरा घर हैं।
यही मेरी संसार है,
यही मेरी पहचान है,
पति का घर कभी पराया नहीं
होता,
यदि वहाँ प्रेम, सम्मान और
अपनापन बसा हो–
तो वही स्त्री का सबसे अपना
आशियाना होता है।

ऊषा शुक्ला

विज्ञान के उस पार

गुरुत्वाकर्षण सा आकर्षण,
मन को खींचे जाता है।
जैसे कोई अदृश्य बंधन,
हृदयों को मिलवाता है।।
नभ में चमके नक्षत्रों सा,
तेरा रूप निखरता है।
ध्रुवतारे की दृढ़ता लेकर,
मेरा मन ठहरता है।।
ज्यों परमाणु के केंद्रों में,
ऊर्जा छिपी रह जाती है।
वैसे ही तेरी स्मृतियाँ,
अंतर में मुस्काती हैं।।
सूर्यग्रहण की बेला जैसे,
क्षण भर तम छा जाता है।
तेरे बिन यह जीवन भी,
सूना-सा रह जाता है।।
इंद्रधनुष के रंगों जैसा,
सपनों का संसार लगे।
विज्ञानों के इस जग में भी,
प्रेम अनंत विस्तार लगे।।
'दया' कहे इस सृष्टि का,
अद्भुत एक विधान है।
सारे सिद्धांतों से ऊपर,
प्रेम स्वयं विज्ञान है।।

...दयाराम साहू
ग्राम-डौकाबांधा
(बंजारी)

जिला-
कबीरधाम
(छत्तीसगढ़)

घर सिर्फ नींव

से नहीं बनता,
बाल-गोपालों के
अच्छे संस्कारों से बनता है।
घर सिर्फ रेत और ईंटों
से नहीं बनता,
परिवार के अच्छे
सदस्यों से बनता है!
घर सिर्फ लोहे से
नहीं बनता,
परिवार के
सदस्यों के मजबूत
इरादों से बनता है!
घर सिर्फ छत
से नहीं बनता,
बडे-बुजुर्गों के
आशीर्वाद से
बनता है।

-दगा पाटील, सहकार विदया
मंदिर बुलढाणा

विद्यादायिनी

हाथ जोड़ विनती करें, हम बच्चे
नादान।
माता वीणा वादिनी, दे हमको वरदान।।
मुखमंडल की आभा प्यारी।
माँ तुम जग में सबसे न्यारी।।
श्वेत कमल का आसन साजे।
वीणा झंकृत होकर बाजे।।
माथे सुंदर किरीट सोहे।
मुख की आभा मन को मोहे।।
ज्ञान दायिनी बुद्धि प्रदाता।
कंठ राग लय स्वर दो माता।।
तमस मिटाओ पथ के सारे।
बनकर रहना सदा सहारे।।
जप-तप पूजा हम ना जानें।
मातु-पिता गुरु तुमको मानें।।
सरस्वती हे शारद माता।
तुम्हें सकल जग शीश नवाता।।
सतत् लेखनी सदा चले माँ।
नवाचार मन भाव पले माँ।।
कोटि-कोटि है नमन चरण में।
हमको रख लो मातु शरण में।।
हे जग जननी तुम्हें पुकारें।
वर दो हम हिम्मत ना हारें।।

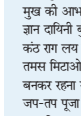

ज्ञान बढ़े अज्ञान हरो
सब।
कृपा दृष्टि से धन्य
करो अब।।

प्रिया देवांगन
'प्रियू 'राजिम

दोहे

भावनाएं भरी रही , हुई नहीं पहचान।
समय रहते जो समझे,ज्ञानी वह इंसान।।
अहंकार में जो रहा, घटा प्रेम का नीर।
बैर भाव बढ़ते गए, धूमिल हुई तस्वीर।।
जिंदगी है सफल वही,मन में जिनके प्यार।
दुसरे के हित में सदा, खोले अपने द्वार।।

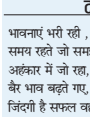

क्या तेरा जो खो
दिया, कुछ तो सोचो
यार।
आंसू पाकर हँस दिए,
समझो यह व्यवहार।।

शिवलाल दाँगी
अध्यापक

अवसर से कैफियत

पल में छिपा अवसर,
जीवन का नया प्रभात।
शांत हवा कहती धीरे,
बदल रहा हर दिन-रात।
सूखे पत्तों की सरसराहट,
नव पल्लव का संदेश।
अंधकार के बाद आता,
उजियारे का परिवेश।
छोटे कदमों में छिपा है,
बड़े सपनों का सार।
मौन नदी भी लिखती रहती,
समय का सुंदर विचार।
क्षण-क्षण में है संभावना,
मन में रख विश्वास।
बूंद-बूंद से भर जाता,
सागर का गहरा आकाश।
फूल खिले या कांटे मिलें,
राह नहीं रुकती कभी।
सूरज रोज़ यही सिखाता,
आशा रहती है सभी।
अवसर को पहचानो मन से,
जीवन का यह गीत।
हर पल में छिपा हुआ है,
सफलता का नव संगीत।

डॉ. अशोक, पटना, बिहार

जीवन का सत्य

कोई भी आपका नहीं
सबकी अपनी ज़िंदगी है
बच्चे हों या पति परमेश्वर
सिर्फ त्याग चाहते हैं
जब तक आप स्वस्थ हैं
आपकी वैल्यू है
क्योंकि सबको काम
प्यारा है

चाम किसी को नहीं
जब तक छोटे रहते हैं
बड़ा होना अच्छा लगता है
लेकिन बड़े होकर समझ आती है
कि बचपन फिर भी अच्छा था
जवानी में देख गए सपने
कभी पूरे नहीं होते क्योंकि
बुढ़ापा आते आते सपने
सिर्फ एक ख्वाब बन जाते हैं

वर्षा वार्ष्णेय अलीगढ़

अशआर-ए-मुहब्बत

किसी के सामने हम भी गुलाम होते थे।
दिल-ए-ज़मीन में ख़्वाबों की फसल बोते थे।
वक़्त ने अपने साथ उसको भी बदल डाला,
हमारी यादों में जो सारी रात रोते थे।
मिले थे पहली बार की थीं प्यार की बातें।
जल्द फिर होनें लगीं प्यार की मुलाकातें।
बुझ गया दीप एक छोटे से झरोखे से,
अकेले झेलनी होंगी अँधेरी बरसातें ।
समझ में आता है मतलब ढली कहानी में।
कोई जरूरी नहीं प्रेम हो जवानी में।
फूल खिलते हैं कभी गुलशनों में देरी से,
बहार आ भी जाती उम्र की रवानी में।
अभी भी याद हैं हमसे किए गए वादे।
बिसात-ए-इश्क़ में हम ही बने रहे प्यादे।

वो चाल में थे कि हर चाल
हमारी ही रहे,
समझ सके न 'अमर' तुम रहे
सीधे-सादे।

अमर सिंह राय नौगाँव,
मध्य प्रदेश

कभी कभी

जुल्म कर जुल्मी कभी फरियादी बन जाता है
निरपराध कभी कभी अपराधी बन जाता है।।
निशा की आगोश में कुकर्म को अंजाम दे जाता है
पर सूरज की उजालें में वही शरीफ नजर आता है।।
खुदगर्ज खातिर चींटी तो क्या हाथी निपटा जाता है
पर वक्त आने पर वह जीव का करीम नजर आता है।।

नेक इंसानियत की चादर ओढ़ पीर
बन जाता है
भीड़ में अपने आपको वही मसीहा
दिखा जाता है।।

लक्ष्मीनारायण सेन

नारी

नारी तुम हो राष्ट्र , राष्ट्रगान भी हो तुम
भविष्य हो तुम, भूत और वर्तमान भी हो तुम
माना नारीं होती कि जिन्दगी आसान
लड़ जातीं इनसे नारियाँ, होतीं अतः महान
पाने के लिए कहे जग, कुछ पड़ता है खोना
पर नारियों की जिंदगी है खोना ही खोना
हे नारियों! इस वास्ते निराश मत होना
दम पर तुम्हारे ही महकता धरा का कोना

संस्कृति
कक्षा- 8 सेंट जेवियर्स
स्कूल, मालवीय नगर- गोण्डा

हे नारी अब उठो ज़रा तुम,कब तक अश्रु बहाओगी।
हिम्मत नहीं जगाई खुद गर,बस पीड़ा ही पाओगी॥
देवी बनकर आई हो तुम,तुम्हें रास्ता दिखलाना।
गला घोट कर इच्छाओं का,इस जीवन में क्या पाना॥
लगे ताक में गिद्ध बहुत से,कैसे वचन निभाओगी।
हे नारी अब उठो ज़रा तुम,कब तक अश्रु बहाओगी।
शक्ति स्वरूपा होकर तुमने,क्यों खामोशी अपनाई।
एक ज़रा सी बात हुई क्या, आँख तुम्हारी भर आई॥
चलो समय के साथ बराबर,गीत खुशी के गाओगी।
हे नारी अब उठो ज़रा तुम,कब तक अश्रु बहाओगी।
सदी बिता दी अबला बनकर, अब चंडी रूप दिखा दो।
दोष मिटाकर इस जीवन के,अब सुख की हवा बहा दो॥
समय तुम्हारा जब आएगा, सुख की बेला लाओगी।
हे नारी अब उठो ज़रा तुम,कबतक अश्रु बहाओगी।।
लोग मतलबी छोड़ स्वंय का, ध्यान तुम्हें करना होगा।
नई चेतना भर जीवन में,रँग भीतर भरना होगा॥
राग पुराना छोड़ो गाना,कब तुम कलम चलाओगी।
हे नारी अब उठो ज़रा तुम कब तक अश्रु बहाओगी।।
इस जीवन को नई दिशा दो, नारी मन जब पाया है।
एक काम ना छोड़ो सीमा,गुणियों ने समझाया है॥
हिम्मत के सँग कदम बढ़ाओ,तब मंजिल पा जाओगी।
हिम्मत नहीं जगाई खुद गर,बस पीड़ा ही पाओगी।।

हे नारी अब उठो ज़रा
तुम,कबतक अश्रु बहाओगी।
हिम्मत नहीं जगाई खुद
गर,बस पीड़ा ही पाओगी।।

सीमा रंगा इन्द्रा

भाखा

बोलत शब्द ल सुन
बचन ले बात ल गुन।

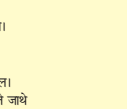

गोठ करे के पहली सोंच
बात बोले के पहली
पोंछा।

नरेन्द्र नन्द
धमतरी,छत्तीसगढ़

हर शब्द के बढ़ होथे मान
शब्द के मोल ल तेहा
जान।
बोले के पहली तेहा देख

गलत बचन कभू न फेख।
जबान संभाल के रहना
नहीं त बढ़ संताप सहना।
हर शब्द होथे अनमोल

बोले के पहली येला तोल।
कन्हू भाखा म जान चले जाथे
कन्हू भाखा म जिनगी बन जाथे

संगी हर मीठ बात म देथे साथ
बांधे रथे मितानी के सुग्घर गांठ

शब्द हर काम करे के हरे ऊजा
समझे त बनगे पुरजा पुरजा ।

जिस सर को सलाम करे दुनिया वो सर पैदा कर

खाली मत बैठ घर में
तू कुछ तो हुनर पैदा कर।
गुम नाम मर जाएं
ये गवारा नहीं हो ,
जो सदियों तक निशानी
बने वो जर पैदा कर।
कुछ बोलें तो दुनिया दिल लगा
कर सुने,
हर बात में अपने तू वो असर
पैदा कर।
मोहब्बत बांट इबादत कर फरिसता बन जा,
जो आसरा बनें सभी का
तू वो
घर पैदा कर।
ये भेद - भाव ये मजहब ये धर्म और
जात,
जो इंसान में इंसान
देखे तू वो नजर पैदा कर।

हंसराज भारतीय, दमदमा

रचनाकार

कुछ लिखने के लिए,
कलम उठा कर बैठता है।
दिमाग पर जोर लगा कर,
क्या लिखे यह सोचता है।
बहुत कुछ सोचने पर भी,
जब कुछ नया नहीं लिख पाता है,
तब बेमन से अपनी कलम,
वापस अपनी जेब में रख लेता है।
फिर सोचता है,
अंतर्मन में जब भाव उठेंगे,
तभी तो कलम उतारेगी,
उनको इस कागज पर।
केवल सोचने से न लिखा जायेगा,
ऐसे तो हर कोई रचनाकार बन जायेगा।
लिखना इतना भी आसान नहीं,
कि कुछ भी लिखा और रचना बन गयी।
लिखने के लिए,
यह हकीकत है कि लिखने वाले के मन में,
एक सार्थक सोच की,

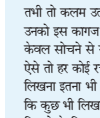

खास जरूरत है।

पारस चन्द
जैन,जनता कॉलोनी,
देवली जिला
टोंक(राज.)

एक न एक दिन

मुझे तो बेइंतहा प्यार है तुमसे
तुम्हें भी एक न एक दिन मुझसे हो ही जाएगा
मुझे तो इकरार है तुमसे
तुम्हें भी एक न एक दिन हो ही जाएगा
तुम्हारे सिवा किसी और के बारे में सोचती तक
नहीं मैं
तुम्हारे बिना जिंदगी की कल्पना करती तक नहीं
मैं
मुझे तो बेइंतहा इश्क है तुमसे
तुम्हें भी एक न एक दिन मुझसे हो ही जाएगा
तुम्हारे इंतजार में रहें तकती हूं मैं
तुम्हारी याद में आहें भरती हूं मैं
अब तो तुम्हारे हां का इंतजार करती रहती हूं मैं
मुझे तो विश्वास है तुम पर
तुम्हें भी एक न एक दिन मुझ पर हो ही जाएगा
मुझे तो बेइंतहा प्यार है तुमसे
तुम्हें भी एक न एक दिन मुझसे हो ही जाएगा

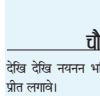

डॉ शकीला कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
बीपी मंडल
अभियंत्रण
महाविद्यालय मधेपुरा
बिहार

चौपाई

देखि देखि नयनन भरि आवे, घर बाहर सब
प्रीत लगावे।
मन मंदिर महँ दीप जलावे, घर भीतर न कलेश
दिखावे।।
काष्ट देखि नयनन भरि आवे, स्वयं कछु समझ
न निज को आवे।
भाग्य परिवर्तन कैसे होई, जब लगि नयन खुलत
नहिं सोई।।
अहो भाग्य को कोसइ लोई, अपनी परछाई नहिं
जोई।
जब तक निज परछाईं न हेरी, तब तक कहाँ
दीखिहै तेरी।।

- सत्येंद्र कुमार
'एस.टी.डी. मौर्य
'कटनी मध्य प्रदेश
7648959825

आहत मन से निकले शब्द...

ऐसी कविता लिख पाऊं जो, मानव में
मानवता भर दे।
वहशी पन में डूबे जन को ,पर पीड़ा से
पीड़ित कर दे।।
चार दिनों की जीवन रेखा, मिट्टी की
यह काया तेरी।
छोड़ चले जाना है तुझको,कर्म और
परछायी तेरी।
नर पिशाच बनकर क्या पाया,अपने मन को
दूषित कर के ।
क्षण भर की वाचिक जिज्ञासा,निज की
पशुता पोषित कर के ।
हृदय भाव सब शून्य हो गए,घायल मन में
ममता भर दे ।
ऐसी कविता लिख पाऊं जो, मानव में मानवता भर दे ।
एक अभागी तड़प रही थी ,नर
पिशाच बतीस के आगे ।
क्या शिक्षा पाया है तूने,निर्मम
कैसा जीव अभागे ।
मौन रहा क्यों दाता तू
भी,जननी की दुर्दशा न देखी ।
पुन : कृष्णा की भरी सभा ने, दुशासन की
नीचता देखी।
न्याय मिले हर एक आह को ,लेखन में वह
क्षमता भर दे ।ऐसी कविता लिख पाऊं जो,
मानव में मानवता भर दे।

रिंकु दुबे ' वैष्णवी 'धनबाद, झारखंड

चलो आगे चलते हैं

चलो अब आगे चलते हैं हम,
इन राहों से हमें क्यों डरना है,
कांटे हों या कठिन अँधेरे हो,
हमें निरंतर बस आगे बढ़ना है।
बीते कल की उन परछाइयों को,
अब चलो पीछे ही उसे रहने दो,
जो खो गया समय की धारा में,
उसको अब चुपचाप बहने दो।
गिरना भी जीवन का हिस्सा है,
ठोकर भी एक प्यार शिक्षक है,
हर संघर्ष की तपती भट्ठी में,
सपनों की यह सच्ची रक्षक है।
थक जाएँ तो चलो थोड़ा ठहरें,
पर रुकना यह अपना धर्म नहीं,

बहती नदियों ने
सिखलाया है,
गतिशीलता से
बढ़कर कर्म नहीं।

- अनुराग
उपाध्याय

हृदय का सत्य

मेरे हृदय का सत्य
मुझे गगमय बनाना
सिखाता है
मेरे हृदय का सत्य
मुझे जीना
सिखाता है
मेरे हृदय का सत्य
मुझे अपने आकाश को
निर्मल बनाना
सिखाता है
मेरे हृदय का सत्य
मुझे अपनी धरती से
प्यार करना
सिखाता है
मेरे हृदय का सत्य
मुझे दुनिया को
सुन्दर बनाना
सिखाता है

-दुर्गाप्रसाद झाला .

यमराज और सपनों की उड़ान

आज सुबह यमराज से मुलाकात
के बाद सपनों की उड़ान पर बहस हो
गई।
उसने कहा - सपनों की उड़ान कैसी
होती है?
क्या मेरी उड़ान से भी प्यारी होती है?
पहले तो मैं झुंझलाया, फिर समझाया
तेरे सपनों के उड़ान की कोई बराबरी ही
नहीं है,
पर हमारे सपनों के बहुतेरे रंग है
कुछ जो सिर्फ उड़ान भरते हैं
तो कुछ सिर्फ सपनों में ही उड़ान भरकर
खुद को बड़ा तीसमार खाँ समझते हैं।
मेरी बात सुन यमराज कहने लगा-
प्रभु के आप के समाज में विडंबनाएं
बहुत हैं
इससे अच्छी तो हमारी कुंठाएँ हैं
आप सपनों की उड़ान को वो भाव नहीं
दे पाते
जो आज नहीं तो कल आपको मंजिल
तक ले जाते।
अच्छा है! आप सब इसी उहापोह में
जी भरकर डूबते उतरवाते रहिए
हमारे चेलों की हाँसला अफजाई करते
रहिए
हमसे यूँ ही प्यार से भेंट मुलाकात करते
रहिए
चाय-कॉफी, नाश्ता-खाना से मेरा
स्वागत करते रहिए
जब कभी आपका खिन्न हो तो
सिर्फ और सिर्फ हमसे ही लड़ते रहिए
सपनों की उड़ान भरिए न भरिए
अपनी मंजिल को छूते रहिए,
बस !अब एक अद्धा पिलाकर मुझे विदा
करिए
और कम से आप तो सपनों की नई
उड़ान भरिए
मेरा धन्यवाद आभार करना बिल्कुल न
भूलिए।

सुधीर श्रीवास्तव गोण्डा उत्तर प्रदेश

हाँ, वह लड़की बहुत ही खूबसूरत है

हाँ, वह लड़की बहुत ही खूबसूरत है।(खूबसूरत है)
हाँ, वह मोहब्बत की एक मूरत है।।(एक मूरत है)
हाँ, वह लड़की बहुत ही----------।।
उसके लब हैं फूलों की तरहां।
उसका दिल है शीशे की तरहां।।
ना कोई अहम उसके चेहरे पर है।
उसका चेहरा है परी की तरहां।।(परी की तरहां)
हाँ, वह लड़की बहुत ही----------।।
हर रोज मुझको वह मिलती है।
बातें चुपके से मेरी वह सुनती है।।
वह हिलाती है हाथ, मुझको देखकर।
मंद- मंद फिर वह हंसती है।।(वह हंसती है)
एक नशा है उसकी अदाओं में।
कजरा लगा रहता है उसके बालों में।।
मीन जैसी है उसकी आँखें हसीन।
रोज आती है वह मेरे ख्वाबों में।।(मेरे ख्वाबों में)
हाँ, वह लड़की बहुत ही----------।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आजाद
तहसील एवं जिला- बारां(राजस्थान)

शारदे स्तुति

भाव मनहर भर सकूँ मैं, आज ये वरदान दो।
जादू बिखेरूँ शब्द का माँ, पास आकर ज्ञान दो।
स्वर साधना चलती रहे नित, दूर हों बाधा सभी।
अक्षर बनें सब मंत्र जैसे, माँ नई पहचान दो।।
मन की हटे सब कामनाएँ, ज्योति ये जगमग करे।
मंजिल रहे बस सामने माँ, नेक ही वह ध्यान दो।।
माला बनाकर शब्द की माँ, शीश आकर नित धरूँ।
गाती रहूँ नव गीत निशदिन, माँ मधुर लय तान दो।।
निस्वार्थ सेवा दूँ सभी को, भावना परहित रहे।
'हिम्मत' बढ़ाना माँ सदा ही, अब अधर मुस्कान दो।।

हिम्मत चौरड़िया प्रज्ञा कोलकाता,लाडनूँ

यह जश्ने आजादी कैसी

जिसमें स्वदेश का प्रेम नहीं।
है राग नहीं, अनुराग नहीं,
है तरुण हृदय में आग नहीं।
सीना छलनी कर देता है
यह कुटिल दंभ भरने वाला
गंगा मैली ही रही जहां
संरक्षित है मय का प्याला ।
जब देखोगे पीछे मुड़कर
यह दिग दिगंत हुंकार रहा
बलिदान, त्याग, समर्पण की
गाथा से जग झंकार रहा।
पह देश है वीरों की थाती,
यह देश है वीरों का गहना
यह देश अहिंसा का सागर,
यह देश है ममता का गागर।
इस देश की मिट्टी में मर मिटने
का जज्बा संकल्पित है
राणा प्रताप के घोड़े का
पद चिन्ह यहां संरक्षित है।

यह देश शिवाजी का सौरभ,
लक्ष्मी बाई की शौर्य जहां।
है पुष्पित करता जन गण मन
का नारा है नित भोर यहाँ।
वंदे मातरम सुजलाम्
सुफलाम्
की प्रहरी का गायन है
धरती से पाप मिटाने को
नर बन जाते नारायण है ।
यह देश नहीं है अबला का
सबला ने शौर्य दिखाया है
जय हिंद पताका भाल सजा
अपना परचम लहराया है।
यह देश है मुनियों का संगम
दुर्वासा, दधीचि,वाल्मीकि
स्तंभित कर विंध्याचल पर्वत
मुनी अगस्त्य है कहलाया है ।

यह देश बना त्योहारों से
सुविचारों से ,संस्कारों से,
असुरों का करता है विनाश
डरता नहीं कुटिल प्रहारों से ।
मंदिर -मस्जिद की कौन कहे
तरुवर भी पूजे जाते है
बरगद, पीपल, तुलसी,शमी,
श्री फल को शीश झुकाते हैं।

है पवन पूज्य ,है अनल पूज्य,
है पूज्य मृदा का कण -कण भी
वसुधा पूज्या ,धेनु पूज्या ,
पूज्या शशि जहां दिवाकर भी।
है सप्त ऋषि का दृश्य जहां
नभ में शोभित मंगल तारा
चंदा मामा, सूरज दादा,
शोभित है व्योम में ध्रुव तारा।

है चतुर्वेद का सार जहां,
अठारह पुराण भी निर्मित है
उपनिषद जहां अनमोल निधि
ब्रह्मांड 'ओम' मे वर्णित है।
जिस धरती पर आने की
अभिलाषा सुर- मुनि भी रखते है
उत्थान कहां, कब पतन कहां
पल-पल जो रहे परखते हैं।

यह जश्ने आजादी कैसी ?
जिसमें सब कुछ हम भूल गए
कुछ छूट रहे, कुछ छोड़ दिया
प्रतिद्वंदी बन कर फूल रहे।
क्या यही भगत का सपना था
क्या गाधी की अभिलाषा थी
क्या यही शिवाजी का पौरूष था
अनुपम सी जिज्ञासा थी ?
सोने की चिड़िया भारत में
चिड़िया घुट- घुट के मर जाती
देती है अग्नि परीक्षा न देखी।

अधिकार जमीं पर ना पाती।
यह हिंसा की ज्वाला यूं ही
नहीं चरम भाव पहुंची होगी
आरंभ कुटिल कुछ तो होगा
खामोशी रहें दी होगी।
संवाद द्विअर्थी, दृष्टि पात
है पंक सहित वो जल प्रपात

जिसने गर्दिश को हवा किया
वो कायर खामोशी होगी ।
हैं कृपाचार्य, हैं द्रोण यहाँ
अब भीष्म प्रतिज्ञा भूल गया
सबकी नजरें हैं झुकी यहाँ
फिर आज कयामत बोल गया।
थी उथल-पुथल सी वो धारा
जिसमें सरिता भी मंद हुई ...
था गरल पिया उसने
घुट- घुट जब हिंसा वो स्वछंद हुई।
ग़ीवा टूटा मस्तक फूटा
आंखों में शीशे के कण थे
था अंग -अंग बिखरा- बिखरा
पाषाण हुए हर दर्पण थे।

चीखी- चिल्लाई तड़प गई
वो मूक, दृष्टिहीन, वधिर बने
घायल करती अपनी आहों को
निर्वाचित थे रुधिर घने।
घायल बस अंग नहीं थे
घायल हुई आत्मा थी उसकी
स्वर्णिम सपने देखा था जिसने
निश्छलता में जीवन की ।
थी गलती उसकी इतनी सी
वह धरती की भगवान बनी
लक्ष्मी रूपा श्वेता बनकर
वह आन बान और शान बनी।

वह कुटिल काल छलता ही रहा
वह निष्ठुर बेला मौन पड़ी
चहु ओर दिशाएं मौन हुईं वह
टूट रही थी घड़ी- घड़ी।
पिंजरे ने पंछी को लूटा
बोलो अब क्या कर पाओगे
फिर से बहेलिया आएगा किस
किसको आंख दिखाओगे ।
नारी हिंसा जब होती है
तब मंद पडे रह जाते हो
छोड़ो यह मसला गैरों का
यह कह कर पीठ दिखाते हो।

दुस्साहस फिर वह कर जाता
फिर जहर कही है भर जाता है
तुम न्याय - न्याय रटते रहते
फिर मोमबत्ती दिखलाते हो।
यह नारी अस्मत की ज्वाला
कैंडल से नहीं सुलगती है
वानर -भालू भी सीखा गए
धू- धू कर लंका जलती है ।
कैसी होगी संरक्षित नारी चिंता
ये है पल-पल की
जीते जी जिसको मार दिया जो
खुशबू थी इक उपवन की।
यह जश्ने आजादी कैसी
जब संरक्षित सरकार ना हो

आचार ना हो व्यवहार ना हो
दायित्वों की दरकार ना हो।
कल का सूरज फिर निकलेगा
पंछी फिर कलरव गाएंगे
तेरी कायरता की गाथा
इतिहास में लिखे जाएंगे।
पाकिस्तानी - खालिस्तानी
विद्रोही की दरकार कहां
आस्तीन के सांप लुटेरे हैं

बाजों की है भरमार यहाँ।
है प्रश्न अनगिनत दफन हुए
तू कब तक साक्ष्य छुपाएगा
दावानल बन धधकेगा तू
चाहे पाताल में जाएगा।
यह जश्ने आजादी कैसी
जब दानव का संहार न हो
हुंकार न हो प्रतिकार ना हो
हिंसा का उपसंहार न हो।
फिर प्रश्न वही है पांचाली का
धर्म राज को भान नहीं
ये जश्ने आजादी कैसी जिसमें
स्वदेश का प्रेम नहीं।
है राग नहीं, अनुराग नहीं,
है तरुण हृदय में आग नहीं।

उर्मिला तिवारी
देवरिया उत्तर प्रदेश